अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) अन्तराय कर्म का अबाधाकाल होता है -

(क) 2000 वर्ष (ख) 3000 वर्ष

(ग) 7000 वर्ष (घ) 10,000 वर्ष ( )

(b) जिसके प्रभाव से जीव ऊँच-नीच कुलों में उत्पन्न होता है, वह कर्म है-

(क) गोत्रकर्म (ख) अन्तराय कर्म

(ग) ज्ञानावरणीय कर्म (घ) मोहनीय कर्म ( )

(c) अनन्तानुबंधी कषाय में मरने वाला जीव गति में जाता है-

(क) तिर्यंच गति (ख) देवगति

(ग) नरकगति (घ) मनुष्यगति ( )

(d) साता वेदनीय कर्म भोगा जाता है-

(क) आठ प्रकार से (ख) छः प्रकार से

(ग) चार प्रकार से (घ) दस प्रकार से ( )

(e) चौथी नरक की आगति है-

(क) 40 (ख) 17

(ग) 16 (घ) 18 ( )

(f) पृथ्वीकाय की गति है-

(क) 243 (ख) 395

(ग) 179 (घ) 50 ( )

(g) मनुष्य गति के भेद हैं-

(क) 48 (ख) 303

(ग) 101 (घ) 56 ( )

(h) सातवीं नरक की गति है-

(क) 10 (ख) 16

(ग) 17 (घ) 46 ( )

(i) पुद्गलास्तिकाय है-

(क) रूपी (ख) अरूपी

(ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(j) अरूपी द्रव्यों तथा चतुस्पर्शी पुदगलों में कौनसा भंग पाया जाता है-

(क) लघु (ख) गुरु

(ग) अगुरुलघु (घ) सभी ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) संज्वलन कषाय में मरने वाला जीव देवगति में जाता है। ( )

(b) सुभग, सुस्वर, प्रत्येक प्रकृति के भेद हैं। ( )

(c) मोहनीय कर्म छः प्रकार से बांधा जाता है। ( )

(d) नामकर्म की उत्कृष्ट स्थिति 70 कोडाकोडी सागरोपम की होती है। ( )

(e) जीव जिस गति से आकर उत्पन्न होता है, उसे आगति कहते हैं। ( )

(f) वनस्पतिकाय के सूक्ष्म, साधारण, प्रत्येक इन तीन के पर्याप्त अपर्याप्त छः भेद होते हैं ( )

(g) सम्मूर्च्छिम मनुष्य पर्याप्त अवस्था में काल करते हैं। ( )

(h) तीर्थंकर की गति मोक्ष की होती है। ( )

(i) पुद्गलों के चौस्पर्शी और अष्टस्पर्शी दो भेद होते हैं। ( )

(j) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जीव 5 उपयोग लेकर जाते हैं, 5 उपयोग लेकर निकलते हैं। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	बेंत का स्तम्भ	(क) नरकगति	.....
(b)	अकाम निर्जरा	(ख) देवगति	.....
(c)	अबाधाकाल 7 हजार वर्ष	(ग) रूपी	.....
(d)	अर्द्धनाराच	(घ) चतुस्पर्शी	.....
(e)	10 त्रिजृंभक	(च) 6	.....
(f)	माघवती	(छ) 9	.....
(g)	अनन्त प्रदेशी स्कन्ध	(ज) देवायु बंध का कारण	.....
(h)	घनोदधि	(झ) मान	.....
(i)	सास्वादन गुणस्थान में उपयोग	(य) संहनन	.....
(j)	पाँच अनुत्तर विमान में योग	(र) मोहनीय	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) **मेरे द्वारा आत्मा के क्षायिक समकित तथा अनन्त वीतरागता गुण का घात किया जाता है।** .....

(b) **मैं सूखे तालाब की दरार के समान हूँ।** .....

(c) **मैं ऐसी कषाय हूँ जो केवल ज्ञान तथा यथाख्यात चारित्र नहीं होने देती हूँ।** .....

(d) **मेरी गति अमर है।** .....

(e) **मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें तीन लेश्या पायी जाती है।** .....

(f) **मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें दो उपयोग होते हैं।** .....

(g) **मैं ऐसा गुणस्थान हूँ जिसमें जीव के चौदह भेदों में से मात्र दो भेद ही पाये जाते है।** .....

(h) **मैं एक ऐसा भंग हूँ जो अरूपी द्रव्यों तथा चतुस्पर्शी पुद्गलों में ही मिलता हूँ।** .....

(i) **मुझमें जीव 3 उपयोग लेकर जाते हैं 3 उपयोग लेकर निकलते हैं।** .....

(j) **मुझमें जीव 5 उपयोग लेकर जाते हैं 3 उपयोग लेकर निकलते हैं।** .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) **ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति तथा उत्कृष्ट अबाधाकाल लिखिए।**

.....

.....

.....

(b) **छः संस्थान के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(c) **8 प्रत्येक प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(d) **नरकायु बंध के कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **उच्च गोत्र कितने प्रकार से जीव बांधता है उनके नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(f) **तीसरी नरक की आगति व गति लिखिए।**

.....

.....

.....

(g) **दूसरे देवलोक की आगति लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **तेउकाय वायुकाय के जीवों की आगति समझाकर लिखिए।**

.....

.....

.....

(i) **तीन विकलेन्द्रिय में जीव कितने उपयोग लेकर आते हैं और कितने उपयोग लेकर निकलते हैं ?**

.....

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **8x4 = (32)**

(a) **प्रत्याख्यानावरण कषाय की चारों प्रकृतियाँ उदाहरण सहित लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **नाम कर्म की 93 प्रकृतियों के अलावा 10 और उत्तर प्रकृतियाँ कौनसी हैं, उनके नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **दर्शनावरणीय, वेदनीय, गोत्र तथा आयुकर्म इन चारों की स्थिति व अबाधाकाल लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **जलचर, थलचर की गति लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **वासुदेव की गति व आगति लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **केवली की गति व आगति को स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **देशविरत श्रावक गुणस्थान, निवृतिबादर गुणस्थान, सूक्ष्मसंपराय गुणस्थान तथा क्षीण मोहनीय गुणस्थान में योग, उपयोग और लेश्या लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **अष्टस्पर्शी रूपी के 15 भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....